विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत व्याकरण 15 जुलाई 2020

वर्ग सप्तम राजेश कुमार पाण्डेय

एन0 सी0 ई0 आर0 टी0 पर आधारित

'क्रिया' के इन दसों रूपों को लकारों के सहारे (संस्कृत में) व्यक्त किया जाता है, जिसे 'लकारार्थ - प्राक्रिया' कहते हैं, अर्थात संस्कृत में क्रिया - पदों की काल - रचना। उपर्युक्त विवेचन को ध्यान में रखते हुए उसी क्रम से यह दसों लकार नीचे दिए जाते हैं

1. **लुङ्** – सामान्य भूतकाल – अध सुष्ठु वृष्टिः अभूत्। (आज अच्छी वर्षा हुई।)
2. **लङ्** – अनधतन भूतकाल – ह्।ः वृष्टिः अभवत्। (कल वर्षा हुई थी।)
3. **लिट्** – परोक्ष अनधतन भूतकाल – राम - रावणयोः युद्धं बभूव (राम - रावण में युद्ध हुआ था।)
4. **लृट्** – सामान्य भविष्यत्काल – अध वर्षः भविष्यन्ति। (आज वर्षा होगी।)
5. **लुट्** – अनधतन भविष्यत्काल – श्वः वृष्टिः भवति। (कल वर्षा होगी।)
6. **लृङ्** – हेतुहेतुमद् भविष्यत्काल – यदि सुवृष्टिः अभविष्यत् तर्हि सुभिक्षम् अभविष्यत्। (यदि अच्छी वर्षा होगी तो फसल भी अच्छी होगी।)

7. **लट्** – **वर्तमानकाल** – **अध वृष्टिः भवति।** (आज वर्षा होती है।)
8. **लोट्- आदेश आदि के लिए-(क) भवान् मम सहचरः भवतु।(आप मेरे साथी होइए)**
   (ख)तव कल्याणं भवतु (तुम्हारा कल्याण हो)
9. **लिङ्-(क) अनुज्ञा या विधिपरक-भवान मम सहचरो भवेत्(आप मेरे सहायक हों)**
10. **लेट्- इस लकार का प्रयोग केवल केवल वैदिक संस्कृत में होता है। लौकिक संस्कृत में नहीं। कल विशेष रूप से अगले क्लास में बताया जाएगा।**